खुश रंगों में डूब जाएँ

तेजी ग्रोवर

होली है! यानी होली आने वाली है और मन में रंगों की बारिश हो रही है। है न? मैं सोच रही थी कि क्यूँ न इस बार हम सब मिलकर ऐसा करें कि रंगों में डूब भी जाएँ फिर भी रंगों के ज़हर से बचे रहें।

मैं रंगों के ज़हर के बारे में ज़्यादा बात नहीं करूँगी। मुझे लगता है हम सब जानते ही हैं कि बाज़ारू रंगों में इतना ज़हर है कि हवा, पानी और मिट्टी के साथ-साथ हमारा स्वास्थ्य भी होली के समय बड़ा खतरा मोल ले रहा होता है। जैसे, हम थर्मामीटर का पारा नहीं खाते, वैसे ही हमें रंगों में डले हुए पारे, सिक्के और उन तमाम रसायनों से बचना चाहिए जो हमारी होली को पूरी तरह बरबाद कर सकते हैं।

पिछले साल मैंने दो बच्चियों के लिए रंग बनाए थे। पूरा समय वे उन्हीं रंगों से होली खेलती रहीं। मुझे याद है विभु और दुर्गा आँगन में खड़ीं हल्दी से बने लाल, भूरे, पीले रंगों को पिचकारी में भर-भरकर एक-दूसरे पर डाल रही थीं। फिर दुर्गा ने बाल्टी में बचे हुए रंग के साथ पूरा नहा लिया। उन बच्चों को देखते हुए हम खुश थे। हमें कोई चिन्ता नहीं थी कि वे बच्चियाँ उन रंगों की वजह से बीमार हो जाएँगी। तुम लोग थोड़ा सोच-विचार कर कई चीज़ों से रंग तैयार कर सकते हो। रंग तैयार करने में भी उतना ही मज़ा है जितना होली खेलने में। देखो होली के कुछ रंगों को:

चित्र: दिलीप चिंचालकर

हल्दी

1. हल्दी को मीठे सोडे के साथ उबाल लो। भूरा-लाल रंग मिलेगा।
2. हल्दी को फिटकरी के साथ उबालने पर चटख नींबुई रंग मिलेगा।
3. इन दोनों को मिलाने से केसरी पीला मिलेगा।

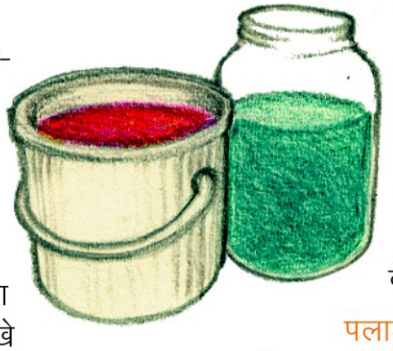

जासौन: लाल रंग के लिए जासौन से अच्छा शायद ही कोई फूल तुमको मिले। जासौन के सूखे फूल बटोरकर भी यह रंग बन जाएगा। कुछ घण्टे नींबू के रस में फूलों को मसलकर डाल दो। फिर 7-8 मिनट तक उबालो। अन्त में फिटकरी डालकर रंग पक्का और गाढ़ा करो। बिना नींबू के भी रंग बन जाएगा।

अनार का छिलका: किसी जूस की दुकान से खूब सारे अनार के छिलके ले आओ। लोहे की कढ़ाही में 15-20 मिनट तक उबालो और फिर रात भर कढ़ाही में ही सब का सब पड़ा रहने दो। अगले दिन कपड़े से छानकर इस गाढ़े भूरे/काले रंग को किसी शीशी में भर लो। यह रंग खूब पक्का होता है।

जामुन की छाल को भी इसी तरह उबालकर गाढ़ा रंग मिलेगा।

नीम की पत्तियों को मसलकर एक दिन पानी में भीगे रहने दो। फिर उबालकर थोड़ी फिटकरी घोल दें। रंग तैयार है।

पलाश (खखरा) के फूलों से भी रंग बनाया जा सकता है। फागुन के समय पलाश पूरा का पूरा फूलों से लदा होता है। फूलों को पानी में उबाल लो। इतना कि पानी सूखकर एक-चौथाई रह जाए। बस रंग तैयार है!

फूल बीनते समय इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि तितलियाँ, मधुमक्खियाँ और कई पक्षी फूलों के रस पर ही जीवित रहते हैं। पलाश के नीचे तुमको फूल चबाती हुई गाय और बछिए दिख जाएँगे। ज़मीन पर कुछ फूल पड़े ज़रूर रहने देना। चकमक